MOUT KI HOLNAKIYAN
MA-A-MARNE KE BA'D KAM AANE WALE AA'MAL
(HINDI BAYAAN)

मौत की सख़्तियां

मअ़ मरने के बा'द कम आने वाले आ'माल

दा'वते इस्लामी के शबे बराअत के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

نَوَیْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِکَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाखि़ल हों, याद आने पर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब आपस में मह़ब्बत रखने वाले दो बन्दे बाहम मुलाक़ात करते हैं और नबिय्ये करीम (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं तो उन दोनों के जुदा होने से पहले उन के अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं ।" (مسند ابی یعلی الموصلی، مسند انس بن مالک، الحدیث: ۲۹۵۱، ج۳، ص۹۵)

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विर्दे ज़बां रहे

मेरी फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकाल दो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हु़सूले सवाब की ख़ाति़र बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं । फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है ।

(اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبَرَانِی ج۶ ص۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता ।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

www.dawateislami.net

बयान सुनने की निय्यतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की निय्यतें

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा । ۞ देख कर बयान करूंगा । ۞ पारह 14 सूरतुन्नहूल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (ह़दीस 4361) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً : ''पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो'' में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा । ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा । ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा । ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा । ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेहन बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज शबे बराअत है, नजात पाने की रात है, भलाइयों वाली रात है, रह़मतों वाली रात है, दुआ़ओं की क़बूलिय्यत की रात है, बख़्शिश की रात है, तक़्सीमे रिज़्क़ की रात है, ह़ाजियों के नाम लिखे जाने की रात है, जहन्नम से छुटकारा पाने की रात है, सआ़दत मन्दी या बद बख़्ती लिखे जाने की रात है, आज वोह रात है कि आयिन्दा शबे बराअत तक मरने वालों के नाम मलकुल मौत ह़ज़रते सय्यिदुना इ़ज़्राईल عَلَيْهِ السَّلَام के सिपुर्द किये जाते हैं, आह !

अ़ज़ीज़ा याद कर जिस दिन कि इ़ज़्राईल आएंगे
न जावे कोई तेरे संग अकेला तू ने जाना है

मलकुल मौत की आमद

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़्क़ाशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي फ़रमाते हैं : बनी इस्राईल का एक इन्तिहाई मग़रूर आदमी अपने घर में किसी फ़र्द के साथ तन्हाई में था, अचानक उस ने देखा कि कोई दरवाज़े से अन्दर आया है, घबरा कर फ़ौरन ग़ुस्से से भड़क उठा और पूछने लगा : तुम कौन हो और किस की इजाज़त से मेरे घर में दाख़िल हुवे हो ? आने वाले ने जवाब दिया : मैं घर के मालिक की इजाज़त से दाख़िल हुवा हूं, मैं वोह हूं जिसे अन्दर आने से कोई पहरेदार रोक सकता है न किसी बादशाह की इजाज़त दरकार है और न ही किसी का रो'ब व दबदबा मुझे ख़ौफ़ज़दा कर सकता है, मुझ से कोई ज़िद्दी और मग़रूर शख़्स पीछा छुड़ा सकता है न कोई सरकश बच सकता है । येह सुन कर उस मग़रूर आदमी को इन्तिहाई नदामत हुई और उस के बदन पर कपकपी त़ारी हो गई, यहां तक कि औंधें मुंह गिर गया, फिर अपने सर को उठा कर ज़िल्लत और भीक मांगने वाले अन्दाज़ में कहने लगा : इस का मत़लब है आप **ह़ज़रते मलकुल मौत** عَلَيْهِ السَّلَام हैं । कहा : मैं ही मलकुल मौत हूं । मग़रूर आदमी ने पूछा : क्या आप मुझे कुछ मोहलत दे सकते हैं ताकि मैं तौबा कर सकूं । ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : हरगिज़ नहीं ! तेरी मुद्दत ख़त्म हो चुकी है, सांसों की गिनती पूरी हो चुकी है, वक़्त पूरा हो चुका

www.dawateislami.net

है और अब तेरे पास कोई रास्ता नहीं बचा। मग़रूर आदमी ने फिर पूछा : आप मुझे ले कर कहां जाएंगे ? कहा : तेरे उस अ़मल की त़रफ़ जो तू ने आगे भेजा है और उस घर की त़रफ़ जो तू ने तय्यार किया है। उस ने कहा : मैं ने कोई नेक अ़मल आगे भेजा है न कोई अच्छा घर तय्यार किया है।

ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : फिर तो जहन्नम की वादी की जानिब ले जाऊंगा जो कि गोश्त को भून कर रख देती है। फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस मग़रूर आदमी की रूह़ क़ब्ज़ कर ली और वोह अपने अहले ख़ाना के दरमियान गिर पड़ा और सब ने रोना धोना और चीख़ना चिल्लाना शुरूअ़ कर दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़्क़ाशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى मज़ीद फ़रमाते हैं : अगर घर वाले उस के बुरे अन्जाम को जान लेते तो और ज़ियादा रोते।

(اِحیاءُ العُلُوم، کتاب ذکر الموت ومابعدہ، الباب الثالث، ۵/۲۱۶)

दिला ग़ाफ़िल न हो यक दम येह दुन्या छोड़ जाना है	*बाग़ीचे छोड़ कर ख़ाली ज़मीं अन्दर समाना है*
तेरा नाज़ुक बदन भाई जो लैटे सेज फूलों पर	*येह होगा एक दिन बे जां इसे कीड़ों ने खाना है*
तू अपनी मौत को मत भूल कर सामान चलने का	*ज़मीं की ख़ाक पर सोना है ईंटों का सिरहाना है*
न बेली हो सके भाई न बेटा बाप ते माई	*तूं क्यूं फिरता है सौदाई अ़मल ने काम आना है*
कहां है ज़ोरे नमरूदी ! कहां है तख़्ते फ़िरऔ़नी !	*गए सब छोड़ येह फ़ानी अगर नादान दाना है*
अ़ज़ीज़ा याद कर जिस दिन कि इ़ज़राईल आएंगे	*न जावे कोई तेरे संग अकेला तू ने जाना है*
जहां के शग़्ल में शाग़िल ख़ुदा के ज़िक्र से ग़ाफ़िल	*करे दा'वा कि येह दुन्या मेरा दाइम ठिकाना है*
ग़ुलाम इक दम न कर ग़फ़्लत ह़याती पर न हो ग़ुर्रा	*ख़ुदा की याद कर हरदम कि जिस ने काम आना है*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मौत उ़म्र देखती है न मोहलत देती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि किस त़रह़ यादे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ व मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ग़ाफ़िल, अ़य्याशियों में मसरूफ़ शख़्स के पास जब मलकुल मौत ह़ज़रते सय्यिदुना इ़ज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام पैग़ामे अजल ले कर तशरीफ़ लाए तो उस की आंखों से ग़फ़्लत का पर्दा हट गया और उस की

आंख खुल गई और फिर रोने और गिड़ गिड़ाने लगा, ह़ालांकि येह शख़्स इस से पहले त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में डूबा हुवा था। लेकिन अब जब कि इज़्राईल عَلَيْهِ السَّلَام तशरीफ़ ले आए तो फ़क़त़ कफ़्फ़े अफ़्सोस मलने और जान ह़वाले करने के इ़लावा कोई चारा न था, क्यूंकि उस वक़्त मौत का फ़िरिश्ता किसी को मोहलत नहीं देता।

सब को मरना ही पड़ेगा याद रखो भाइयो !
देर में जाएगा कोई, कोई चल देगा सवेर

(वसाइले बख़्शिश, स. 234)

एक दिन मरना है आख़िर मौत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दिन और रात गोया दो सुवारियां हैं, जिन पर हम बारी बारी सुवार होते हैं, येह सुवारियां मुसलसल अपना सफ़र जारी रखे हुवे हैं और हमें मौत की मन्ज़िल पर पहुंचा कर ही दम लेंगी, क्या कभी हम ने ग़ौर किया कि दिन के गुज़रने और रात के कटने पर हम बहुत ख़ुश होते हैं, ह़ालांकि हमारी ज़िन्दगी का एक दिन एक रात कम हो जाती है और हम मौत के मज़ीद क़रीब हो जाते हैं, हमारी हैसिय्यत तो उस बल्ब की सी है जिस की सारी चका चौंद और तवानाई प्लास्टिक के एक बटन में छुपी होती है, उस बटन पर पड़ने वाला उंगली का हल्का सा दबाव उस की रोशनियां गुल कर देता है, इसी त़रह़ मौत का वक़्त आने पर हमारा चाको चौबन्द जिस्म इतना बे बस हो जाता है कि हम अपनी मर्ज़ी से हाथ भी नहीं हिला सकते, अगर्चे येह तै़ है कि एक दिन हमें भी मरना है, मगर हम नहीं जानते कि मौत आने में कितना वक़्त बाक़ी है ? क्या मा'लूम कि आज का दिन हमारी ज़िन्दगी का आख़िरी दिन या आने वाली रात हमारी ज़िन्दगी की आख़िरी रात हो ! बल्कि हमारे पास तो इस की भी ज़मानत नहीं कि एक के बा'द दूसरा सांस ले सकेंगे या नहीं ? ऐन मुमकिन है कि जो सांस हम ले रहे हैं वोही आख़िरी हो, दूसरा सांस लेने की नौबत ही न आए ! क्या ख़बर येह बयान सुनने के दौरान ही ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام हमारी रूह़ क़ब्ज़ फ़रमा

लें ! आए दिन येह ख़बरें हमें सुनने को मिलती हैं कि फ़ुलां अच्छा ख़ासा था, ब ज़ाहिर उन्हें कोई मरज़ भी न था, लेकिन अचानक हार्ट फेल हो जाने की वजह से चन्द मिनट के अन्दर अन्दर उन का इन्तिक़ाल हो गया, यूंही किसी भी लम्हे हमें इस दुन्या से रुख़्सत होना पड़ सकता है क्यूंकि जो रात क़ब्र में गुज़रनी है वोह बाहर नहीं गुज़र सकती ।

दिला ग़ाफ़िल न हो यक दम येह दुन्या छोड़ जाना है	*बाग़ीचे छोड़ कर ख़ाली ज़मीं अन्दर समाना है*
अ़त्लसो कम ख़्वाब के बिस्तर पे यूं नाज़ां न हो	*इस तने बे जान पर ख़ाकी कफ़न रह जाएगा*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी मरने से पहले मौत की तय्यारी करनी चाहिये, गुनाहों और ग़फ़्लत भरी ज़िन्दगी को छोड़ कर नेकियों की राह पर गामज़न हो जाना चाहिये, वरना क़ब्रो ह़श्र के अ़ज़ाब के साथ साथ इस से पहले मौत की हौलनाकियों और सख़्तियों का सामना भी करना पड़ेगा । याद रखिये ! जब किसी की मौत का वक़्त क़रीब आता है और उस की रूह़ निकल रही होती है तो येह इन्तिहाई दुश्वार मुआ़मला है । नज़्अ़ के वक़्त पेश आने वाली सख़्तियों का ज़िक्र कुरआने मजीद में भी मौजूद है । चुनान्चे, पारह 26 सूरए قٓ आयत नम्बर 19 में इरशाद होता है :

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ﴿۱۹﴾ (پ۲۶، قٓ:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती ह़क़ के साथ येह है जिस से तू भागता था ।*

याद रखिये ! मौत की सख़्तियों और तक्लीफ़ों को बरदाश्त करना इन्तिहाई दुश्वार अ़मल है : अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار से फ़रमाया : ऐ का'ब ! हमें मौत के बारे में बताइये ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! मौत उस शाख़ की त़रह़ है जिस में बहुत सारे कांटे हों और उसे किसी आदमी के पेट में यूं दाख़िल किया जाए कि हर कांटा

www.dawateislami.net

किसी न किसी रग में अटक जाए, फिर कोई शख़्स इसे झटके से खींचे तो जो कुछ निकलना था वोह निकल आया और जो बाक़ी रह गया वोह रह गया।"

(احیاءالعلوم، ۵/۲۱۰)

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : ऐ ह़वारियों की जमाअ़त ! तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ मांगो कि वोह मुझ पर मौत की सख़्तियां आसान फ़रमा दे, क्यूंकि मुझे मौत का ख़ौफ़ इस क़दर है कि कहीं इस के ख़ौफ़ से ही मुझे मौत न आ जाए। (احیاءالعلوم، ۵/۲۰۸)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हमें येह बात पहुंची है कि क़ियामत आने तक मुर्दा मौत की तक्लीफ़ महसूस करता रहता है। (احیاءالعلوم، ۵/۲۰۹)

सकरात में गर रूए मुह़म्मद पे नज़र हो हर मौत का झटका भी मुझे फिर तो मज़ा दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 120)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नज़्अ़ के वक़्त इन्सान की रूह़ निकलना इन्तिहाई दुश्वार और तक्लीफ़ देह अ़मल है। लिहाज़ा इस दुश्वारी से बचने के लिये इस की तय्यारी इन्तिहाई ज़रूरी है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मौत बहुत बड़ी मुसीबत है, लेकिन इस से बड़ी मुसीबत येह है कि इन्सान मौत से ग़ाफ़िल हो जाए और इस की याद से मुंह फेर ले और इस के लिये आ'माल करना छोड़ दे, बेशक मौत में ग़ौरो फ़िक्र करने वाले और इ़ब्रत पकड़ने वाले के लिये नसीह़त व इ़ब्रत मौजूद है। (التذکرۃ باحوال الموتی وامور الآخرۃ، ص:۸)

हाए ! ग़ाफ़िल वोह क्या जगह है जहां पांच जाते हैं चार फिरते हैं
जाग ! सुन्सान बन है रात आई गुर्ग बहरे शिकार फिरते हैं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 100)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! मौत की हौलनाकियों का सह़ीह़ मा'नों में तसव्वुर ही जान लेवा है। यक़ीनन अ़क़्लमन्द वोही है जो इस

www.dawateislami.net

जहाने नापाएदार की दिल चस्पियों से बेगाना हो कर मौत की सख़्तियों और तक्लीफ़ों को पेशे नज़र रखते हुवे इसी की तय्यारी में मश्गूल रहे । मगर अफ़्सोस ! हम अ़क्ल मन्दी का सुबूत देने के बजाए मौत से यक्सर ग़ाफ़िल बैठे हैं, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : अगर जानवरों को मौत के बारे में इतना इ़ल्म हो जाता जितना तुम जानते हो तो तुम इन में से किसी को मोटा ताज़ा न खाते ।

(التذكرة باحوال الموتى وامور الآخرة، ص:٨)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने कि अगर जानवरों को मौत के मुतअ़ल्लिक़ इतनी मा'लूमात मिल जाएं कि जितनी हमें हैं तो इन में से कोई भी फ़र्बा न होता । हम जानते हैं कि मौत बर ह़क़ है, येह भी मा'लूम है कि एक दिन ज़रूर मरना है, इस बात से भी बा ख़बर हैं कि रूह़ निकलने का वक़्त इन्तिहाई कड़ा होगा और मरने के बा'द दुन्यादारी, रिश्तेदारी और हमारी बुलन्द कोठी व गाड़ी कुछ काम न आएंगी, इस बात का भी शुऊ़र है लेकिन न जाने क्यूं ग़फ़्लत की नींद सोए हुवे हैं । मन्क़ूल है कि अगर मौत की तक्लीफ़ का एक क़त़रा दुन्या के पहाड़ों पर रख दिया जाए तो सब के सब पिघल जाएं ।(احياء العلوم، ٢٠٩/٥) अब ज़रा सोचिये ! वोह मौत कि जिस की तक्लीफ़ के एक क़त़रे का येह ह़ाल है कि बुलन्दो बाला पहाड़ जिस की ताब न ला कर पिघल जाएं तो येह तक्लीफ़ इन्सान के लिये किस क़दर अज़िय्यत का बाइ़स बनती होगी ?

जां-कनी की तक्लीफ़ें ज़ब्ह़ से हैं बढ़ कर काश ! मुर्ग़ बन के त़ैबा में ज़ब्ह़ हो गया होता
काश ! कि न दुन्या में पैदा मैं हुवा होता क़ब्रो ह़श्र का हर ग़म ख़त्म हो गया होता

(वसाइले बख़्शिश, स. 158,160)

दर ह़क़ीक़त मौत की शिद्दत व तकलीफ़ तो वोही जान सकता है जो इस का ज़ाइक़ा चख ले, मगर जिस ने मौत का ज़ाइक़ा नहीं चखा वोह ख़ुद को पहुंचने वाले दर्द और तक्लीफ़ से इस का अन्दाज़ा कर सकता है । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : इस

www.dawateislami.net

का अन्दाज़ा यूं हो सकता है कि जिस्म का जो हिस्सा बे जान हो चुका हो उसे दर्द का एहसास नहीं होता और जिस में जान हो उसे दर्द का एहसास होता है, जो कि दर अस्ल रूह को होता है, लिहाज़ा जब कोई हिस्सा ज़ख़्मी होता है या आग से जल जाता है तो येही जलन या तक्लीफ़ रूह की जानिब बढ़ती है और जिस क़दर बढ़ती है उसी क़दर रूह तक्लीफ़ महसूस करती है। अन्दाज़ा करो कि (इस) सूरत में तक्लीफ़ गोश्त, ख़ून और दीगर हिस्सों में तक़्सीम होती है और रूह तक इस का कुछ ही हिस्सा पहुंच पाता है, जब कि अगर येही तक्लीफ़ दीगर हिस्सों को न पहुंचे और बराहे रास्त रूह तक पहुंच जाए तो इस की तक्लीफ़ और शिद्दत का आ़लम क्या होगा ? (احیاءالعلوم، ۵/۲۰۷) मज़ीद फ़रमाते हैं : नज़्अ़ की तकालीफ़ बराहे रास्त रूह पर हम्ला आवर होती हैं और फिर येह तकालीफ़ तमाम बदन में यूं फैल जाती हैं कि हर हर रग, पठ्ठे, हिस्से और जोड़ से रूह खींची जाती है नीज़ हर बाल की जड़ और सर से पाउं तक की खाल के हर हिस्से से रूह निकाली जाती है। (احیاءالعلوم، ۵/۲۰۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रूह निकलने की तक्लीफ़ के साथ साथ मालो अस्बाब, दोस्त अह़बाब, मां-बाप और भाई-बहन से बिछड़ने का ग़म, मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को देखने का ख़ौफ़, तंगो तारीक क़ब्र की तन्हाई का डर, मुहीब सूरतों वाले फ़िरिश्तों या'नी मुन्कर नकीर के सुवालों के जवाबात देना मुर्दे के लिये किस क़दर पुर ख़तर मराहिल होते होंगे ? हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस के फ़ज़्लो करम और आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं, यक़ीनन हम से मौत की सख़्तियां और हौलनाकियां बरदाश्त न हो सकेंगी, इस लिये हमें चाहिये कि गुनाहों से दूर रहें और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी वाले कामों से बचते रहें और उस की ख़ुफ़्या तदबीर से डरते रहें। आज से बल्कि अभी से पक्की सच्ची तौबा कर लीजिये और आयिन्दा गुनाह न करने का अ़ज़्मे मुसम्मम कर लीजिये। नेकियों में दिल लगाने, गुनाहों से पीछा छुड़ाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता रहिये, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़, हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरे में इजतिमाई तौ़र पर शिर्कत और हर माह

www.dawateislami.net

3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये, इस की बरकत से हमें नेकियां करने के बे शुमार मवाक़ेअ् मुयस्सर आएंगे और मरने से पहले आख़िरत की तय्यारी करने का मौक़अ् मिलेगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

गोरे निकां बाग़ होगी ख़ुल्द का मुजरिमों की क़ब्र दोज़ख़ का गढ़ा
कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश, स. 712)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मौत की सख़्तियों के अस्बाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर शख़्स पर मौत की सख़्तियां उस के आ'माल के मुत़ाबिक़ होती हैं, अगर हम ने अपनी ज़िन्दगी नेक आ'माल में बसर की होगी तो वक़्ते नज़्अ़ हमारी रूह़ आराम से निकलेगी और अगर सारी उ़म्र مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ गुनाहों का सिलसिला रहा तो मौत की सख़्तियां बरदाश्त न कर सकेंगे। लिहाज़ा अभी ज़िन्दगी को ग़नीमत जानते हुवे मा'मूली नज़र आने वाले गुनाह से भी बाज़ रहिये और सुस्ती के सबब छोटी सी नेकी भी हरगिज़ हरगिज़ न छोड़िये। याद रखिये !

क़ब्र को जन्नत का बाग़ बनाने वाले आ'माल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह दुन्या दारुल अ़मल (या'नी अ़मल करने की जगह) और आख़िरत दारुल जज़ा (या'नी बदला लेने की जगह) है, जो हम यहां बोएंगे वोही आख़िरत में काटेंगे, गन्दुम बो कर चावल की फ़स्ल ह़ासिल करने की चाहत को दीवाने का ख़्वाब ही कहा जा सकता है। इस लिये समझदारी का तक़ाज़ा येही है कि जो आप काटना चाहते हैं उसी का बीज बोइये। लिहाज़ा जन्नत में जाने के लिये जन्नत में ले जाने वाले आ'माल करने होंगे, वोह जन्नत जहां एक इन्तिहाई ख़ूब सूरत जहान आबाद है, जिस में मौत का आज़ार (या'नी दुख व तक्लीफ़) नहीं, बीमारियां और क़र्ज़दारियां नहीं, जिस में बुढ़ापे की कमज़ोरी नहीं, ग़रीबी, नादारी, मा'ज़ूरी और मजबूरी नहीं बल्कि येह वोह मक़ाम है जहां ज़िन्दगी की सारी रा'नाइयां जम्अ़ कर दी गई

www.dawateislami.net

हैं। ह़सीन हूरें, मज़ेदार खाने और फल ऐसे कि लोग तसव्वुर नहीं कर सकते, बिस्तर और लिबास ऐसे उ़म्दा कि आज बादशाहों को नसीब नहीं, कमरे और महल ऐसे शानदार कि दुन्या के बड़े बड़े महल्लात इन के सामने छोटे दिखाई दें। फिर येह सब कुछ हमेशा के लिये मिलेगा, इस में कमी का अन्देशा है न छिन जाने का खटका, लेकिन नेकियां कमाने के लिये कुछ तो महनत करनी पड़ेगी, इन्सान रोज़गार में भी तो मशक़्क़त उठाता है कि इस के नतीजे में रोज़ी मिलती है। आज हम माल को बहुत अहम समझते हैं मगर याद रखिये कि बिल फ़र्ज़ हमारी क़ब्र सोने से भर दी जाए, हमारा सारा सरमाया इस में मुन्तक़िल कर दिया जाए तो भी हमें राह़त का एक लम्हा नहीं दिलवा सकता, येह ज़मीन, येह प्लॉट भी हमारे किसी काम न आएंगे, हम समझते हैं कि येह ज़मीन हमारी है ? नहीं ! बल्कि हम इस के हैं कि एक दिन इसी में समा जाएंगे। अवलाद व अह़बाब और रिश्तेदार सिर्फ़ ख़ाक में लिटाना जानते हैं, फिर सिर्फ़ आ'माल ही हमारे रफ़ीक़े क़ब्र होंगे। दुन्या वालों की अश्कबारियां और उदासियां बरज़ख़ में हमारे क्या काम आएंगी ? सोगवारों की कसरत क्या फ़ाइदा देगी ! कभी आप ने सोचा ? ऐ काश ! फ़िक्रे आख़िरत हम पर ऐसी ग़ालिब हो जाए कि जब तारीकी देखें तो क़ब्र का अन्धेरा याद आ जाए, कोई तक्लीफ़ पहुंचे तो क़ब्रो ह़श्र की परेशानियां सामने आ जाएं, सोने लगें तो मौत और क़ब्र में लेटना याद आ जाए, ऐ काश ! हमारा दिल नेकियों में ऐसा लग जाए कि गुनाह के ख़याल से भी दूर भागें !

आइये ! क़ब्र को रौनक़ बख़्शने और इसे आराम देह बनाने वाले चन्द आ'माल के बारे में जानते हैं : चुनान्चे,

(1 ता 5) नमाज़, रोज़ा, ह़ज और ज़कात वग़ैरा

ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब नेक आदमी को क़ब्र में रखा जाता है तो उस के आ'माले सालिह़ा, नमाज़, रोज़ा, ह़ज, जिहाद और सदक़ा वग़ैरा उस के पास जम्अ़ हो जाते हैं, जब अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उस के पैरों की त़रफ़ से आते हैं तो नमाज़ कहती है : इस से दूर रहो, तुम्हारा यहां कोई काम नहीं, येह इन पैरों पर खड़ा हो कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की

www.dawateislami.net

इबादत किया करता था। फिर वोह फ़िरिश्ते सर की त़रफ़ से आते हैं तो रोज़ा कहता है : तुम्हारे लिये इस त़रफ़ कोई राह नहीं है क्यूंकि दुन्या में **अल्लाह** तआ़ला की ख़ुश्नूदी के लिये इस ने बहुत रोज़े रखे और त़वील भूक प्यास बरदाश्त की, फ़िरिश्ते उस के जिस्म के दूसरे ह़िस्सों की त़रफ़ से आते हैं तो ह़ज और जिहाद कहते हैं कि हट जाओ, इस ने अपने जिस्म को तक्लीफ़ में डाल कर **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये ह़ज और जिहाद किया था लिहाज़ा तुम्हारे लिये यहां कोई जगह नहीं है। फिर वोह हाथों की त़रफ़ से आते हैं तो सदक़ा कहता है : मेरे दोस्त से हट जाओ, इन हाथों से कितने सदक़ात निकाले हैं जो महज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये दिये गए और इन हाथों से निकल कर वोह बारगाहे इलाही में मक़्बूलिय्यत के दरजे पर फ़ाइज़ हुवे लिहाज़ा यहां तुम्हारा कोई काम नहीं है। फिर उस मय्यित को कहा जाता है कि तेरी ज़िन्दगी और मौत दोनों बेहतरीन हैं और रह़मत के फ़िरिश्ते उस की क़ब्र में जन्नत का फ़र्श बिछाते हैं, उस के लिये जन्नती लिबास लाते हैं, ह़द्दे निगाह तक उस की क़ब्र को फ़राख़ कर दिया जाता है और जन्नत की एक क़िन्दील उस की क़ब्र में रोशन कर दी जाती है जिस से वोह क़ियामत के दिन तक रोशनी ह़ासिल करता रहेगा। (مکاشفۃ القلوب،باب فی بیان القبر وسؤالہ،ص۱۷۱)

दो अन्धेरे दूर होंगे

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه 'फ़ैज़ाने सुन्नत' जिल्द 1 के सफ़ह़ा 872 पर लिखते हैं : मन्क़ूल है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से फ़रमाया कि मैं ने उम्मते मुह़म्मदिय्या عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को दो नूर अ़त़ा किये हैं ताकि वोह दो अन्धेरों के ज़रर (या'नी नुक़्सान) से महफ़ूज़ रहें। सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! वोह दो नूर कौन कौन से हैं ? इरशाद हुवा : "**नूरे रमज़ान और नूरे कुरआन।**" अ़र्ज़ की : दो अन्धेरे कौन कौन से हैं ? फ़रमाया : "एक क़ब्र का और दूसरा क़ियामत का।" (دُرَّةُ النَّاصِحِين ص۹)

www.dawateislami.net

ख़ुश्बूदार क़ब्र

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ग़ालिब ह़दानी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِى को जब दफ़्न किया गया तो इन की क़ब्र से मुश्क की महक आने लगी । एक मरतबा किसी ने इन को ख़्वाब में देखा तो पूछा : "आप की क़ब्र से ख़ुश्बू कैसी आती है ?" फ़रमाया : تِلْكَ رَائِحَةُ التِّلَاوَةِ وَالظَّمَاءِ या'नी येह तिलावत और रोज़े की बरकत है ।" (حلیۃ الاولیاء، الحدیث ۸۵۵۳، ج۶، ص۲۶۶)

नमाज़ व रोज़ा व ह़ज व ज़कात की तौफ़ीक़ अ़ता हो उम्मते मह़बूब को सदा या रब

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(6) सब्र के अन्वार

एक त़वील ह़दीसे पाक में येह भी है कि जब मरने वाले को क़ब्र में रखा जाता है तो नमाज़ उस की दाईं त़रफ़ आती है और रोज़े बाईं त़रफ़ और कुरआन व ज़िक्रो अज़्कार उस के सर के पास और उस का नमाज़ों की त़रफ़ चलना क़दमों की त़रफ़ और सब्र क़ब्र के एक गोशे में आता है । फ़िर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़ज़ाब भेजता है तो नमाज़ कहती है : "पीछे हट कि येह तमाम ज़िन्दगी तकालीफ़ बरदाश्त करता रहा, अब आराम से लेटा है ।" फिर अ़ज़ाब बाईं त़रफ़ से आता है तो रोज़े येही जवाब देते हैं, सर की जानिब से आता है तो येही जवाब मिलता है । पस अ़ज़ाब किसी जानिब से भी उस के पास नहीं पहुंचता । जिस राह से जाना चाहता है उसी त़रफ़ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दोस्त को मह़फ़ूज़ पाता है लिहाज़ा वोह वहां से चला जाता है । उस वक़्त सब्र तमाम आ'माल से कहता है कि मैं इस लिये न बोला कि अगर तुम सब आ़जिज़ हो जाते तो मैं बोलता, लेकिन मैं अब पुल सिरात़ और मीज़ान पर काम आऊंगा । (الموسوعۃ لابن ابی الدنیا، الحدیث ۲۵۴، ج۵، ص۴۷۲)

www.dawateislami.net

(7) मस्जिद रोशन करने की बरकत

हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मरफ़ूअ़न रिवायत की, कि "जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मसाजिद को रोशन किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की क़ब्र को रोशन फ़रमाएगा और जिस ने इस में ख़ुश्बूएं रखीं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जन्नत में उस के लिये ख़ुश्बू मुहय्या करेगा।" (شرح الصدور بشرح حال الموتی والقبور، ص۱۵۹)

(8) मरीज़ की इ़यादत

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अ़र्ज़ की, कि "मरीज़ की इ़यादत करने वाले को क्या अज्र मिलेगा ?" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "उस के लिये दो फ़िरिश्ते मुक़र्रर किये जाएंगे जो क़ियामत तक उस की क़ब्र में रोज़ाना उस की इ़यादत करेंगे।"

(شرح الصدور بشرح حال الموتی والقبور، ص۱۵۹)

(9) सूरए मुल्क पढ़ने का इन्आ़म

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब बन्दा क़ब्र में जाएगा तो अ़ज़ाब उस के क़दमों की जानिब से आएगा तो उस के क़दम कहेंगे : "तेरे लिये मेरी त़रफ़ से कोई रास्ता नहीं, क्यूंकि येह रात में **सूरए मुल्क** पढ़ा करता था।" फिर अ़ज़ाब उस के सीने या पेट की त़रफ़ से आएगा तो वोह कहेगा कि "तुम्हारे लिये मेरी जानिब से कोई रास्ता नहीं, क्यूंकि येह रात में **सूरए मुल्क** पढ़ा करता था।" फिर वोह उस के सर की त़रफ़ से आएगा तो सर कहेगा कि "तुम्हारे लिये मेरी त़रफ़ से कोई रास्ता नहीं, क्यूंकि येह रात में **सूरए मुल्क** पढ़ा करता था।" तो येह सूरत रोकने वाली है, अ़ज़ाबे क़ब्र से रोकती है, तौरात में इस का नाम सूरए मुल्क है। जो इसे रात में पढ़ता है बहुत ज़ियादा और अच्छा अ़मल करता है।

(المستدرک، کتاب التفسیر، باب المانعۃ من عذاب القبر، الحدیث ۳۸۹۲، ج۳، ص ۳۲۲)

www.dawateislami.net

क़ब्र में फ़िरिश्ता क़ुरआन पढ़ाएगा

रसूले सक़लैन, सुल्त़ाने कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स क़ुरआन पढ़ना शुरूअ़ करे और इसे अज़बर करने से पहले ही मर जाए तो उस की क़ब्र में एक फ़िरिश्ता उसे क़ुरआन शरीफ़ सिखाता है तो इस ह़ाल में वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात करेगा कि उसे पूरा क़ुरआन ह़िफ़्ज़ होगा।" (کنز العمال، الحدیث ۴۴۴۲، ج۱، ص۳۷۲)

(10) सूरए यासीन शरीफ़ की बरक़त

मुल्के यमन में जब लोग एक मुर्दे को दफ़्न कर के वापस होने लगे तो उन्हों ने क़ब्र में मारने पीटने की आवाज़ सुनी। फिर अचानक क़ब्र से एक काला कुत्ता नुमूदार हुवा। एक शख़्स ने पूछा : "तू कौन है ?" उस ने जवाब दिया : "मैं मय्यित का बुरा अ़मल हूं।" पूछा : "पिटाई तुम्हारी हो रही थी या उस मुर्दे की ?" उस ने कहा : "मेरी ही हो रही थी, **सूरए यासीन** और दूसरी सूरतें उस के पास थीं, वोह मेरे और उस के दरमियान ह़ाइल हो गईं और मुझ को मार भगाया।" (شرح الصدور، ص۱۸۶)

(11) सूरए सजदह शफ़ाअ़त करेगी

ह़ज़रते ख़ालिद बिन मा'दान ताबेई رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सूरए सजदह क़ब्र में अपने पढ़ने वाले के बारे में झगड़ा करेगी और अ़र्ज़ करेगी : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर मैं तेरी किताब में से हूं तो इस के बारे में मेरी सिफ़ारिश क़बूल फ़रमा ले और अगर मैं तेरी किताब में से नहीं हूं तो मुझे अपनी किताब से मिटा दे।" **सूरए सजदह** परन्दे की मानिन्द होगी और अपने परों को पढ़ने वाले पर फैला देगी, उस के ह़क़ में शफ़ाअ़त करेगी और उसे क़ब्र के अ़ज़ाब से बचाएगी। (درمنثور، ج۶، ص۵۳۵)

www.dawateislami.net

(12) सूरए ज़िलज़ाल पढ़ने की बरकतें

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है : जिस ने जुमुआ़ के दिन मग़रिब के बा'द दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी और हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिहा के बा'द "اِذَا زُلْزِلَتْ" (या'नी सूरए ज़िलज़ाल) पन्दरह मरतबा पढ़ी तो **अल्लाह** तआ़ला उस पर सकराते मौत की सख़्ती नर्म कर देगा, उसे अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ फ़रमा देगा और पुल सिरात़ पर साबित क़दमी अ़त़ा फ़रमाएगा। (شرح الصدور، ص ۱۸٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब मय्यित क़ब्र में दफ़्न की जाती है तो क़ब्र उसे दबाती है, क़ब्र के दबाने से न मोमिन बचता है न काफ़िर, न नेक न बद, बच्चा न जवान, फ़र्क़ सिर्फ़ येह है कि काफ़िर सख़्त दबाव में पकड़ा जाता है उस की पस्लियां इधर उधर हो जाती हैं और मोमिन के लिये दबाव ऐसा होता है जिस त़रह़ मां अपने बच्चे को प्यार से दबाती है। बिल्ली अपने बच्चे को भी मुंह में दबाती है और चूहे को भी मगर दोनों में फ़र्क़ है।

(माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1 स. 141 व जि. 2 स. 456-457)

(13) सूरए इख़्लास पढ़ने का फ़ाइदा

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने मरज़ुल मौत में सूरतुल इख़्लास पढ़ी तो वोह क़ब्र के फ़ितने और इस के दबाने से मह़फ़ूज़ रहेगा। (المعجم الاوسط ج ۴ ص ۲۲۲ حدیث ۵۷۸۵)

(14) शबे जुमुआ़ का दुरूद

बुज़ुर्गाने दीन علیہم رحمۃ اللہ المبین ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा :

www.dawateislami.net

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ
الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

तो वोह मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص۱۵۱ملخصًا)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(15) क़ब्र की ग़म गुसार

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं कि मैं ने एक जनाज़े को कन्धा देने के बा'द कहा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे लिये मौत में बरकत दे। तो एक ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी : "और मौत के बा'द भी।" येह सुन कर मुझ पर बहुत ख़ौफ़ त़ारी हुवा। जब लोग उसे दफ़्न कर चुके तो मैं क़ब्र के पास बैठ कर अह़वाले आख़िरत पर ग़ौरो फ़िक्र करने लगा। अचानक क़ब्र से एक ह़सीनो जमील शख़्स बाहर निकला, उस ने साफ़ सुथरे कपड़े पहन रखे थे जिन से ख़ुश्बू महक रही थी। उस ने मुझ से कहा कि : "ऐ इब्राहीम !" मैं ने कहा : "**लब्बैक**" फिर मैं ने उन से पूछा : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए, आप कौन हैं ?" उन्हों ने जवाब दिया : तख़्त पर से "मौत के बा'द भी" कहने वाला मैं ही हूं। मैं ने कहा कि आख़िर आप का नाम क्या है ? तो उन्हों ने कहा कि मेरा नाम सुन्नत है मैं दुन्या में इन्सान की हमदर्द होती हूं और क़ब्र में नूर व मूनिस व ग़म गुसार और क़ियामत में जन्नत की त़रफ़ रहनुमा और क़ाइद बनती हूं। (شرح الصدور، ص۲۰۴)

www.dawateislami.net

(16) तहज्जुद का नूर

ताजदारे ह़रम, सरापा जूदो करम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मरतबा ह़ज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से फ़रमाया : ''जब तुम कहीं सफ़र पर रवाना होते हो तो कितनी तय्यारी करते हो ! क़ियामत की तय्यारी का आ़लम क्या होगा ! ऐ अबू ज़र (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) ! क्या मैं तुम को ऐसी शै की ख़बर न दूं जो तुम्हें क़ियामत के दिन नफ़्अ़ दे ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ की : मेरे मां-बाप आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कुरबान ज़रूर इरशाद फ़रमाइये तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''सख़्त गर्मी के मौसिम में ह़श्र के लिये रोज़ा रखो और रात की तारीकी में दो रक्अ़त पढ़ो ताकि क़ब्र में रोशनी हो ।''

(موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب التہجد وقیام اللیل، الحدیث ۱۰، ج ۱، ص ۲۴۲)

(17) नेकी की दा'वत

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई : ''भलाई की बातें ख़ुद भी सीखो और दूसरों को भी सिखाओ, मैं भलाई सीखने और सिखाने वालों की क़ब्रों को रोशन फ़रमाऊंगा ताकि उन को किसी क़िस्म की वह़शत न हो ।''

(حلیۃ الاولیاء ج ۶، ص ۵، رقم ۷۶۲۲)

मुबल्लिग़ीन की क़ब्रे اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلّ जग मगाएंगी

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस रिवायत को नक़्ल करने के बा'द लिखते हैं : इस रिवायत से नेकी की बात सीखने सिखाने का अज्रो सवाब मा'लूम हुवा । सुन्नतों भरा बयान करने या दर्स देने और सुनने वालों के तो वारे ही न्यारे हो जाएंगे اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلّ उन की क़ब्रें अन्दर से जगमग जगमग कर रही होंगी और उन्हें किसी क़िस्म का ख़ौफ़ मह़सूस नहीं होगा । इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे नेकी की दा'वत देने वालों मदनी क़ाफ़िले में सफ़र और फ़िक्रे मदीना कर के मदनी इन्आ़मात का रिसाला रोज़ाना पुर करने की तरग़ीब दिलाने वालों और सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की दा'वत पेश करने वालों नीज़

मुबल्लिग़ीन की नेकी की दा'वत को सुनने वालों की क़ुबूर भी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हुज़ूरे मुफ़ीजुन्नूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर के सदक़े नूरुन अ़ला नूर होंगी।

अ़ता हो 'नेकी की दा'वत' का ख़ूब जज़्बा कि दूं धूम सुन्नते महबूब की मचा या रब

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(18) दुन्या में मुसीबत उठाना

किसी बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन ज़कवान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن को उन की वफ़ात के एक साल बा'द ख़्वाब में देखा तो इस्तिफ़्सार किया : कौन सी क़ब्रें ज़ियादा रोशन हैं ? फ़रमाया, दुन्या में मुसीबतें उठाने वालों की। (تنبیہ المغترین، الباب الثالث، ص۱۶۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! वोह घुप अन्धेरी क़ब्र जिसे दुन्या का कोई बरक़ी बल्ब रोशन नहीं कर सकता اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर के सदक़े परेशान ह़ालों के लिये नूर नूर हो कर जगमगा उठेगी।

ख़्वाब में भी ऐसा अन्धेरा कभी देखा न था जैसा अन्धेरा हमारी क़ब्र में सरकार है
या रसूलल्लाह आ कर क़ब्र रोशन कीजिये ज़ात बेशक आप की तो मम्बए अन्वार है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(19) लोगों को तक्लीफ़ न पहुंचाने का इन्आ़म

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू काहिल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जो लोगों को तक्लीफ़ पहुंचाने से बाज़ रहा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़ब्र की तक्लीफ़ से बचाएगा। (المعجم الکبیر، الحدیث۸۲۹، ج۸۱، ص۱۶۳)

(20) सदक़ा देने से क़ब्र की गर्मी दूर होती है

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक किसी शख़्स का सदक़ा उस की क़ब्र से गर्मी को दूर कर देता है और क़ियामत के दिन मोमिन अपने सदक़े के साए में होगा।"

(المعجم الکبیر، الحدیث۷۸۸، ج۱۷، ص۲۸۶)

www.dawateislami.net

इल्म क़ब्र में साथ रहेगा

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब आ़लिम फ़ौत होता है तो उस का इल्म क़ियामत तक क़ब्र में उस को मानूस करने के लिये मुतशक्किल हो कर (या'नी शक्ल इख़्तियार कर के) रहता है और ज़मीन के कीड़ों को दूर करता है।

(شرح الصدور للسیوطی، باب احادیث الرسول صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فی عدۃ امور، ص ۸۵۱)

अवलाद को इल्मे दीन सिखाने की बरकत

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام एक क़ब्र के पास से गुज़रे तो देखा कि क़ब्र में मुर्दे को अ़ज़ाब हो रहा था। कुछ देर बा'द फिर गुज़रे तो देखा कि क़ब्र में नूर ही नूर है और वहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बरस रही है। आप عَلَيْهِ السَّلَام बहुत ह़ैरान हुवे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे इस का राज़ बता दे कि पहले इस पर अ़ज़ाब क्यूं हो रहा था और अब इसे जन्नत की ने'मतें कैसे मिल गईं ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ ईसा ! येह सख़्त गुनहगार और बदकार था, इस वजह से अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार था, मरने के बा'द इस के घर लड़का पैदा हुवा और आज उस को मद्रसे भेजा गया, उस्ताज़ ने उसे बिस्मिल्लाह पढ़ाई, मुझे ह़या आई कि मैं ज़मीन के अन्दर उस शख़्स को अ़ज़ाब दूं ? जिस का बच्चा ज़मीन पर मेरा नाम ले रहा है ! ! !"

(التفسیر الکبیر، الباب الحادی عشر، ج ۱، ص ۵۵۱)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्मे दीन सिखाने का एक ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदारिसुल मदीना और जामिआ़तुल मदीना भी हैं, जहां पर हज़ारहा त़लबा व त़ालिबात अलग अलग इल्मे दीन ह़ासिल करते हैं।

मेरी आने वाली नस्लें तेरे इ़श्क़ ही में मचलें उन्हें नेक तुम बनाना मदनी मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मुसलमान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करने का सवाब

नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, क़ासिमे ने'मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स किसी मोमिन के दिल में ख़ुशी दाख़िल करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस ख़ुशी से एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमाता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत और ज़िक्र में मसरूफ़ रहता है। जब वोह बन्दा अपनी क़ब्र में चला जाता है तो वोह फ़िरिश्ता उस के पास आ कर पूछता है : "क्या तू मुझे नहीं पहचानता ?" वोह कहता है कि "तू कौन है ?" तो वोह फ़िरिश्ता कहता है कि "मैं वोह ख़ुशी हूं जिसे तू ने फ़ुलां के दिल में दाख़िल किया था, आज मैं तेरी वह़शत में तुझे उन्स पहुंचाऊंगा और सुवालात के जवाबात में साबित क़दम रखूंगा और तुझे रोज़े क़ियामत के मनाज़िर दिखाऊंगा और तेरे लिये तेरे रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सिफ़ारिश करूंगा और तुझे जन्नत में तेरा ठिकाना दिखाऊंगा।" (الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ، باب الترغیب فی قضاء حوائج المسلین، الحدیث ۲۳، ج ۳، ص ۲۶۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मरने के बा'द क़ब्र की तन्हाइयों, वह़शतों, घबराहटों, अन्धेरों में काम आने वाले आ'माल के बारे में आप ने सुना, नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात क़ब्र में काम आएंगे, अ़ज़ाब से बचाएंगे, रमज़ान व क़ुरआन क़ब्र व क़ियामत का अन्धेरा दूर करेंगे, तिलावत व रोज़े क़ब्र में ख़ुश्बू का बाइ़स बनेंगे, सब्र क़ब्र में रोशनी करेगा और पुल सिरात़ व मीज़ान पर काम आएगा, मस्जिद को रोशन करना, क़ब्र की रोशनी का सबब बनेगा, मरीज़ की इ़यादत करने वाले मुसलमान के लिये दो फ़िरिश्ते रोज़ाना क़ब्र में उस की इ़यादत करेंगे, सूरए मुल्क की तिलावत अ़ज़ाबे क़ब्र से बचाएगी, क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ करने की कोशिश में मरने वाला येह सआ़दत पाएगा कि फ़िरिश्ता उसे क़ब्र में क़ुरआन ह़िफ़्ज़ करवाएगा, सूरए यासीन क़ब्र से अ़ज़ाब को मार भगाएगी, सूरए सजदा अ़ज़ाबे क़ब्र से बचाएगी, सूरए ज़िलज़ाल पढ़ने की बरकत से सकराते मौत की सख़्ती आसान, अ़ज़ाबे क़ब्र से

www.dawateislami.net

तहफ़्फ़ुज़ और पुल सिरात़ पर साबित क़दमी अ़ता होगी, प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करना, क़ब्र में रोशनी व उन्सिय्यत का सबब बनेगा, नमाज़े तहज्जुद, क़ब्र में रोशनी करेगी, नेकी की दा'वत देना, क़ब्र की वह़शत दूर कर के रोशनी का बाइ़स होगा, सदक़ा, क़ब्र की गर्मी को दूर करेगा, इ़ल्मे दीन, क़ब्र में उन्सिय्यत देगा और ज़मीन के कीड़ों को दूर करेगा, अवलाद को इ़ल्मे दीन सिखाने की बरकत से अ़ज़ाबे क़ब्र दूर होगा, मुसलमान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करने के सबब, क़ब्र की वह़शत में उन्सिय्यत होगी और नकीरैन के सुवालात के जवाबात में साबित क़दमी अ़ता होगी।

जवाबे क़ब्र मैं मुन्कर नकीर को दूंगा   तेरे करम से अगर ह़ौसला मिला या रब

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेक आ'माल क़ब्र में कुशादगी, रोशनी, ख़ुश्बू और रिज़ाए इलाही का सबब बनेंगे और अगर बुरे आ'माल ले कर क़ब्र में पहुंचे तो **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी की सूरत में क़ब्र जहन्नम का गढ़ा भी बन सकती है, अ़ज़ाब का सिलसिला भी हो सकता है, याद रखिये ! पेशाब के छींटों से न बचना, चुग़ल ख़ोरी करना अ़ज़ाबे क़ब्र के अस्बाब में से है, ग़ीबत करना, नमाज़ की अदाएगी में ग़फ़्लत बरतना, अ़ज़ाबे क़ब्र के अस्बाब में से है, वालिदैन के नाफ़रमान को क़ब्र इस त़रह़ दबाएगी कि पस्लियां टूट फूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो जाएंगी, ज़कात न देने का गुनाह भी, अ़ज़ाबे क़ब्र का सबब है, शराब नोशी, बदकारी, झूटी क़समें खाना और रोज़ा न रखना, येह भी अ़ज़ाबे क़ब्र के अस्बाब में से हैं, मिलावट करना, अ़ज़ाबे क़ब्र के अस्बाब में से है, ग़ुस्ले जनाबत में इस क़दर ताख़ीर करना कि नमाज़ का वक़्त निकल जाए, येह भी अ़ज़ाबे क़ब्र के अस्बाब में से है, सूदख़ोरी, अ़ज़ाबे क़ब्र के अस्बाब में से है, मस्जिद में हंसना, क़ब्र में अन्धेरा लाने के अस्बाब में से है, याद रखिये ! हम अपनी क़ब्र को याद करें या न करें, क़ब्र रोज़ाना पुकार पुकार कर हमें याद करती है। चुनान्चे,

क़ब्र की पुकार

मोह़तरम नबी, मक्की मदनी, मह़बूबे रब्बे ग़नी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "क़ब्र रोज़ाना पुकार कर कहती है कि मैं मसाफ़रत का घर हूं, मैं तन्हाई का घर हूं, मैं मिट्टी का घर हूं और मैं कीड़ों का घर हूं ।" जब मोमिन बन्दा दफ़्नाया जाता है तो क़ब्र कहती है : "मरह़बा ! तुम अपने ही घर आए ! मेरी पीठ पर चलने वालों में से तुम मुझे ज़ियादा मह़बूब हो, आज जब तुम मेरे ह़वाले कर दिये गए हो तो तुम अ़न क़रीब देखोगे मैं तुम से क्या (अच्छा) सुलूक करती हूं ।" चुनान्चे, क़ब्र उस के लिये ह़द्दे निगाह तक कुशादा हो जाती है और उस के लिये जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया जाता है । मगर जब गुनहगार या काफ़िर आदमी दफ़्न किया जाता है, तो क़ब्र कहती है : "न तो तुझे मुबारक हो और न ही येह तेरा घर है । मेरी पीठ पर चलने वालों में से मेरे नज़दीक तू सब से बुरा है, आज जब की तू मेरे सिपुर्द किया गया तो अ़न क़रीब तू देखेगा मैं तेरी कैसी ख़बर लेती हूं !" येह कह कर क़ब्र उसे इस त़रह़ दबाती है कि मुर्दे की पस्लियां एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं । रावी कहते हैं : येह बात फ़रमाते हुवे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने हाथों की उंगलियों को एक दूसरे में डाला, फिर फ़रमाया : "उस के लिये सत्तर अज़्दहे मुसल्लत़ कर दिये जाते हैं कि अगर इन में से एक भी ज़मीन पर फूंक मार दे तो रहती दुन्या तक ज़मीन से कुछ न उगे, येह अज़्दहे उसे डसते और नोचते रहेंगे यहां तक कि उसे ह़िसाब के लिये ले जाया जाए ।"

(جامع الترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، الحدیث ۲۴۶۸، ج۴، ص ۲۰۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हाए हमारा क्या बनेगा ! हम तो अपनी क़ब्र को यक्सर भूले हुवे हैं । **फ़तहुल बारी** में है : "اِنَّ الْبَرْزَخَ مُقَدَّمَةُ الْاٰخِرَةِ या'नी बेशक बरज़ख़ आख़िरत की पेशगोई है ।"

(فتح الباری، کتاب الادب، تحت الحدیث ۶۰۵۵، ج۱۰، ۳۹۹)

आह ! हमारी ग़फ़्लत कि नज़्अ़ की सख़्तियों, क़ब्र के अन्धेरों, इस में मौजूद कीड़े मकोड़ों, मुन्कर नकीर के सख़्त लहजे में किये जाने वाले सुवालों, बोसीदा हो जाने वाली हड्डियों, अ़ज़ाबे क़ब्र की शिद्दतों से आगाह होने के बा वुजूद नेकियां कमाने की जुस्त्जू नहीं करते !

गो पेशे नज़र क़ब्र का पुर होल गढ़ा है अफ़्सोस मगर फिर भी येह ग़फ़्लत नहीं जाती
ऐ रह़मते कौनैन ! कमीने पे करम हो हाए ! नहीं जाती बुरी ख़स्लत नहीं जाती

(वसाइले बख़्शिश, स. 382)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तन्हाई ही काफ़ी है

बिलफ़र्ज़ अगर क़ब्र में कोई अ़ज़ाब न भी हो तो तंगो तारीक क़ब्र में त़वील अ़र्से तक तन्हा रहना ही शदीद आज़माइश है क्यूंकि हमारी नाज़ुक मिज़ाजी का तो येह आ़लम है कि अगर हमें तमाम सहूलिय्यात व आसाइशात से आरास्ता व पैरास्ता आ़लीशान बंगले या कोठी में कुछ दिनों के लिये तन्हा क़ैद कर दिया जाए तो घबरा जाएं।

कह रही है शाहों से क़ब्र की येह तन्हाई ताजो तख़्त के मालिक आज क्यूं अकेले हैं

दुन्या से जाने वालों को याद कीजिये

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : "मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कभी कभी तन्हाई में दिल को हर त़रह़ के दुन्यावी ख़यालात से पाक कर के अपने उन दोस्तों, रिश्तेदारों को याद कीजिये जो वफ़ात पा चुके हैं, अपने क़ुर्बो जवार में रहने वाले फ़ौत शुदगान में से एक एक को याद कीजिये और तसव्वुर ही तसव्वुर में उन के चेहरे सामने लाइये और ख़याल कीजिये कि वोह किस त़रह़ दुन्या में अपने अपने मन्सब व काम में मश्ग़ूल थे, लम्बी लम्बी उम्मीदें बांधे दुन्यावी ता'लीम के ज़रीए मुस्तक़बिल की बेहतरी के लिये कोशां थे और ऐसे कामों की तदबीर में लगे थे जो शायद

www.dawateislami.net

सालहा साल तक मुकम्मल न हो सकें, दुन्यावी कारोबार के लिये वोह त़रह़ त़रह़ की तक्लीफ़ें और मशक़्क़तें बरदाश्त किया करते थे, वोह सिर्फ़ इस दुन्या ही के लिये कोशिशों में मसरूफ़ थे, इसी की आसाइशें उन्हें मह़बूब और इसी का आराम उन्हें मरग़ूब था । वोह यूं ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे गोया उन्हें कभी मरना ही नहीं, चुनान्चे, वोह मोत से ग़ाफ़िल, ख़ुशियों में बद मस्त और खेल तमाशों में मगन थे । उन के कफ़न बाज़ार में आ चुके थे लेकिन वोह इस से बे ख़बर दुन्या की रंगीनियों में गुम थे । आह ! इसी बे ख़बरी के आ़लम में उन्हें यका यक मौत ने आ लिया और वोह क़ब्रों में पहुंचा दिये गए । उन के मां बाप ग़म से निढ़ाल हो गए, उन की बेवाएं बे ह़ाल हो गईं, उन के बच्चे बिलकते रह गए, मुस्तक़बिल के ह़सीन ख़्वाबों का आईना चकना चूर हो गया । उम्मीदें मलया मेट हो गईं, उन के काम अधूरे रह गए, दुन्या के लिये उन की सब मह़नतें राईगां गईं । वुरसा उन के अमवाल तक़्सीम कर के मज़े से खा रहे हैं और उन को भूल चुके हैं ।

जब इस बज़्म से उठ गए दोस्त अक्सर और उठते चले जा रहे हैं बराबर
येह हर वक़्त पेशे नज़र जब है मन्ज़र यहां पर तेरा दिल बहलता है क्यूं कर
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

(वीरान मह़ल, स. 17)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मौत को याद करने का फ़ाइदा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिसे मौत की याद ख़ौफ़ज़दा करती है क़ब्र उस के लिये जन्नत का बाग़ बन जाएगी ।" (جمع الجوامع، الحدیث ۳۵۱۶، ج۲، ص۱۴)

www.dawateislami.net

अपनी मौत को याद कीजिये

ज़रा तसव्वुर की निगाह से देखिये कि मेरी मौत का वक़्त आन पहुंचा है, मुझ पर ग़शी त़ारी हो चुकी है, लोग बे बसी के आ़लम में मुझे मौत के मुंह में जाता हुवा देख रहे हैं मगर कुछ कर नहीं सकते, नज़्अ़ की सख़्तियां भी शुरूअ़ हो गईं मगर मैं अपनी तक्लीफ़ किसी को बता नहीं सकता क्यूंकि हर वक़्त चहकने वाली ज़बान अब ख़ामोश हो चुकी है, सख़्त प्यास महसूस हो रही है मगर किसी से दो घूंट पानी नहीं मांग सकता, इसी दौरान कोई मुझे तल्क़ीन करने (या'नी मेरे सामने कलिमए पाक पढ़ने) लगा, फिर रफ़्ता रफ़्ता सामने के मनाज़िर धुंदले होने लगे, गले से ख़र ख़राहट की आवाज़ें आना शुरूअ़ हो गईं और बिल आख़िर रूह़ ने जिस्म का साथ छोड़ दिया या'नी मेरा इन्तिक़ाल हो गया। अ़ज़ीज़ो अक़ारिब पर गिर्या त़ारी हो गया। अहलो इ़याल मसलन बीवी बच्चों, बहन भाई, मां-बाप वग़ैरा की आंखें शिद्दते ग़म से नम हैं। किसी ने आगे बढ़ कर मेरी आंखें बंद कर दीं, पाउं के दोनों अंगूठे और दोनों जबड़ों को कपड़े की पट्टी से बांध कर मुझ पर चादर ओढ़ा दी गई। मेरी मौत के ए'लानात होने लगे, रिश्तेदारों और दोस्तों को इत्तिलाआ़त दी जाने लगीं। कुछ लोग मेरी तक्फ़ीन व तदफ़ीन के इन्तिज़ामात में लग गए। ग़ुस्ल का इन्तिज़ाम होने पर मुझे तख़्ताए ग़ुस्ल पर लिटा कर ग़ुस्ल दिया गया और कफ़न पहना कर मेरी मय्यित आख़िरी दीदार के लिये रख दी गई। मेरे चाहने वालों ने आख़िरी मरतबा मुझे देखा कि येह चेहरा अब दुन्या में दोबारा हमें दिखाई न देगा, घर की फ़ज़ा सोगवार है और दरो दीवार पर उदासी छाई हुई है। फिर मेरे नाज़ उठाने वालों ने मेरा जनाज़ा अपने कन्धों पर उठा लिया और जनाज़ा गाह की त़रफ़ बढ़ना शुरूअ़ हो गए। वहां पहुंच कर मेरी नमाज़े जनाज़ा अदा की गई और मेरे जनाज़े का रुख़ उस क़ब्रिस्तान की त़रफ़ कर दिया गया जहां मुझे अपनी ज़िन्दगी में रात के वक़्त तन्हा आने की हिम्मत नहीं होती थी मगर अब न जाने कितनी रातें इस क़ब्रिस्तान में गुज़ारनी होंगी !

www.dawateislami.net

येह वोही क़ब्रिस्तान है जो अपने नए मकीनों का मुन्तज़िर होता है, जहां पर इन्सानों के साथ उन की ख़्वाहिशात भी दफ़्न हो जाती हैं। लोगों ने मेरी लाश को चारपाई से उठा कर उस क़ब्र में मुन्तक़िल कर दिया जिस के बारे में ह़दीसे पाक में आया कि जन्नत का एक बाग है..या..दोज़ख़ का गढ़ा ! (اَلتَّرغِیب وَالتَّرہِیب ج۴ ص۲۰۱، الحدیث:۵۱۱۵) क़ब्र पर मिट्टी डाल कर जब मेरे साथ आने वाले लौट कर चले तो मैं ने उन के क़दमों की चाप सुनी, उन के जाने के बा'द क़ब्र मुझ से हम कलाम हुई और कहने लगी : ऐ आदमी ! क्या तू ने मेरे ह़ालात न सुने थे ? क्या मेरी तंगी, बदबू, हौलनाकी और कीड़ों से तुझे नहीं डराया गया था ? अगर ऐसा था तो फिर तू ने क्या तय्यारी की ?

क़ब्र में मुझ को लिटा कर और मिट्टी डाल कर चल दिये साथी न पास अब कोई रिश्तेदार है
ख़्वाब में भी ऐसा अन्धेरा कभी देखा न था जैसा अन्धेरा हमारी क़ब्र में सरकार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 479,480)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हम पर क्या गुज़रेगी ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन्सान के दो घर होते हैं : एक ज़मीन के ऊपर और एक ज़मीन के अन्दर (या'नी क़ब्र), आज हम अपने घर को आराम देह व पुर सुकून बनाने के लिये कैसे कैसे जतन करते हैं ? अन्धेरे को दूर करने के लिये जगह जगह बल्ब रोशन करते हैं, गर्मी में ठन्डक के लिये ऐर कन्डीशनर (Air conditioner) और सर्दी के मौसिम में सर्दी से बचने के लिये हीटर (Heater) तक लगवाते हैं, बिजली चली जाए तो मुतबादिल इन्तिज़ाम के त़ौर पर जनरेटर और यू.पी.एस (U.P.S) तय्यार रखते हैं, मगर एक दिन सब कुछ छोड़ छाड़ कर ख़ाली हाथ दूसरे घर या'नी क़ब्र में मुन्तक़िल हो जाएंगे । सोचिये तो सही उस वक़्त हम पर क्या गुज़रेगी जब क़ब्र

की वह्शतों, गहरी तारीकियों और अजनबी माह़ोल की उदासियों में तन्हा होंगे, कोई हमदर्द न मददगार, किसी को बुला सकें न ख़ुद कहीं जा सकें, हम पर कैसी घबराहट त़ारी होगी !

अन्धेरा काट खाता है अकेले ख़ौफ़ आता है तो तन्हा क़ब्र में क्यूं कर रहूंगा या रसूलल्लाह
नकीरैन इमतिहां लेने को जब आएंगे तुर्बत में जवाबात उन को आक़ा कैसे दूंगा या रसूलल्लाह
बराए नाम दर्दे सर सहा जाता नहीं मुझ से अ़ज़ाबे क़ब्र कैसे सह सकूंगा या रसूलल्लाह
यहां चूंटी भी तड़पा दे मुझे तो क़ब्र के अन्दर मैं क्यूं कर डंक बिच्छू के सहूंगा या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 322-323)

मुर्दे के सदमे

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 'फ़ैज़ाने सुन्नत' जिल्द 2 के 499 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल बाब, 'ग़ीबत की तबाहकारियां' सफ़ह़ा 67 पर है : अव्वल तो मौत के सदमे का तसव्वुर ही जान को घुलाने वाला है और ऊपर से ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ व मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी की सूरत में अ़ज़ाब हुवा तो कैसे बरदाश्त हो सकेगा ! मुर्दे के सदमे का नक़्शा खींचते हुवे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : वोह मौत का ताज़ा सदमा उठाए हुवे रूह़ (कि निकलते वक़्त) जिस का अदना झटका सो ज़र्बे शम्शीर (या'नी तल्वार के सो वार) के बराबर, जिस का सदमा हज़ार ज़र्बे तैग़ (या'नी तल्वार के हज़ार वार) से सख़्त तर, बल्कि मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام का देखना ही हज़ार तल्वार के सदमे से बढ़ कर। वोह निरी तन्हाई, वोह हर त़रफ़ भयानक बे कसी छाई, इस पर वोह नकीरैन (या'नी मुन्कर नकीर) का अचानक आना, वोह सख़्त हैबतनाक सूरतें दिखाना कि आदमी दिन को हज़ारों के मज्मअ़ में देखे तो ह़वास बजा न रहें, काला रंग, नीली आंखें देगों के बराबर बड़ी, अबरक़ (चमकीली धात) की त़रह़ शो'ला ज़न, सांस जैसे आग की लपट, बेल के सींगों की त़रह़ लम्बे नोक दार कीले (या'नी अगले दांत),

www.dawateislami.net

ज़मीन पर घिसटते सर के पेचीदा बाल, क़दो क़ामत जिस्म व जसामत बला व क़ियामत कि एक शाने (या'नी कन्धे) से दूसरे (कन्धे) तक मन्ज़िलों (या'नी बे शुमार किलो मीटर्ज़) का फ़ासिला, हाथों में लोहे का वोह गुर्ज़ (या'नी हथोड़ा) कि अगर एक बस्ती के लोग बल्कि जिन्नो इन्स जम्अ् हो कर उठाना चाहें न उठा सकें, वोह गरज कड़क की हौलनाक आवाज़े, वोह दांतों से ज़मीन चीरते ज़ाहिर होना, फिर इन आफ़ात पर आफ़त येह कि सीधी त़रह़ बात न करना, आते ही झन्झोड़ डालना, मोहलत न देना, कड़कती झिड़कती आवाज़ों में इमतिह़ान लेना।

وَحَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ اِرْحَمْ ضُعْفَنَا يَا كَرِيْمُ يَا جَمِيْلُ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى نَبِيِّ الرَّحْمَةِ وَاٰلِهِ الْكِرَامِ وَسَاءِرِ الْاُمَّةِ اٰمِيْنَ اٰمِيْنَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ۔

(**तर्जमा :** और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे लिये काफ़ी है और वोह सब से बड़ा कारसाज़ है। ऐ करम फ़रमाने वाले ! हमारी कमज़ोरी पर रह़मो करम फ़रमा, ऐ रब्बे जमील ! दुरूदो सलाम भेज नबिय्ये रह़मत (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर और उन की इ़ज़्ज़त वाली आल और बक़िय्या तमाम उम्मत पर। क़बूल फ़रमा क़बूल फ़रमा, ऐ सब से ज़ियादा रह़मो करम फ़रमाने वाले !)

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 9, स. 934 ता 937)

घुप अन्धेरा ही क्या वह़शत का बसेरा होगा — क़ब्र में कैसे अकेला मैं रहूंगा या रब !
गर कफ़न फाड़ के सांपों ने जमाया क़ब्ज़ा — हाए बरबादी ! कहां जा के छुपूंगा या रब !
डंक मच्छर का सहा जाता नहीं, कैसे मैं फिर — क़ब्र में बिच्छू के डंक आह सहूंगा या रब !
गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी — हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब !
अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा — गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(वसाइले बख़्शिश, स. 84,85)

www.dawateislami.net

क़ब्र वाले किस पर रश्क करते हैं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है : "कोई दिन ऐसा नहीं कि जिस में मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام क़ब्रिस्तान में येह ए'लान न करते हों : "ऐ क़ब्र वालो ! आज तुम्हें किन लोगों पर रश्क है ?" तो वोह जवाब देते हुवे कहते हैं : "हमें मस्जिद वालों पर रश्क है कि वोह मस्जिदों में नमाज़ पढ़ते हैं और हम नमाज़ नहीं पढ़ सकते । वोह रोज़े रखते हैं और हम नहीं रख सकते । वोह सदक़ा करते हैं और हम नहीं कर सकते । वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते हैं और हम नहीं कर सकते ।" फिर अहले क़ब्र अपने गुज़श्ता ज़माने पर नादिम (या'नी शर्मसार) होते हैं ।"

(الروض الفائق، المجلس الثالث فی ذکر الموت۔۔۔الخ، ص۲۷)

वोह है ऐशो इ़शरत का कोई म़हल भी — जहां ताक में हर घड़ी हो अजल भी
बस अब अपने इस जह़ल से तू निकल भी — येह जीने का अन्दाज़ अपना बदल भी
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है — येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अभी से तय्यारी कर लीजिये

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ हमें क़ब्रो ह़श्र की तय्यारी का ज़ेह्न अ़त़ा करते हुवे फ़रमाते हैं : "मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई अ़क़्लमन्द वोही है जो मौत से क़ब्ल मौत की तय्यारी करते हुवे नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा कर ले और सुन्नतों का मदनी चराग़ क़ब्र में साथ ले जाए और यूं क़ब्र की रोशनी का इन्तिज़ाम कर ले, वरना क़ब्र हरगिज़ येह लिह़ाज़ न करेगी कि मेरे अन्दर कौन आया ? अमीर हो या फ़क़ीर, वज़ीर हो या उस का मुशीर, ह़ाकिम हो या मह़कूम, अफ़्सर हो या चपरासी, सेठ हो या मुलाज़िम, डॉक्टर हो या मरीज़, ठेकेदार हो या मज़दूर । अगर किसी के साथ भी तौशए आख़िरत में कमी रही, नमाज़ें क़स्दन क़ज़ा कीं, रमज़ान शरीफ़ के रोज़े बिला

www.dawateislami.net

उ़ज़्रे शरई न रखे, फ़र्ज़ होते हुवे भी ज़कात न दी, ह़ज फ़र्ज़ था मगर अदा न किया, बा वुजूदे कुदरते शरई पर्दा नाफ़िज़ न किया, मां-बाप की नाफ़रमानी की, झूट, ग़ीबत, चुग़ली की आ़दत रही, फ़िल्में, डिरामे देखते रहे, गाने बाजे सुनते रहे, दाढ़ी मुन्डवाते या एक मुठ्ठी से घटाते रहे। अल ग़रज़ ख़ूब गुनाहों का बाज़ार गर्म रखा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी की सूरत में सिवाए ह़सरत व नदामत के कुछ हाथ न आएगा। जिस ने फ़राइज़ के साथ साथ नवाफ़िल की भी पाबन्दी की, रमज़ानुल मुबारक के इ़लावा नफ़्ली रोज़े भी रखे, कूचा कूचा, गली गली नेकी की दा'वत की धूमें मचाईं, कुरआने पाक की ता'लीम न सिर्फ़ ख़ुद ह़ासिल की बल्कि दूसरों को भी दी, चौक दर्स देने में हिचकिचाहट मह़सूस न की, घर दर्स जारी किया, सुन्नतों की तर्बिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों में बा क़ाइदगी से सफ़र करने के साथ साथ दीगर मुसलमानों को भी इस की तरग़ीब दिलाई, रोज़ाना मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर माह अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम से ईमान सलामत ले कर दुन्या से रुख़्सती हुई तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस की क़ब्र में ह़श्र तक रह़मतों का दरया मौजें मारता रहेगा और नूरे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चश्मे लहराते रहेंगे।

क़ब्र में लहराएंगे ता ह़श्र चश्मे नूर के जल्वा फ़रमा होगी जब त़ल्अ़त रसूलुल्लाह की

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(बादशाहों की हड्डियां, स. 17)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! सच्ची तौबा करने वाला गुनाहों से पाक कर दिया जाता है, जैसा कि फ़रमाया गया कि : गुनाहों से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उस ने गुनाह किया ही नहीं।

www.dawateislami.net

इस मुबारक शब में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला "बनी कल्ब" की बकरियों के बालों से भी ज़ियादा लोगों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है। किताबों में लिखा है : "क़बीलए बनी कल्ब' क़बाइले अ़रब में सब से ज़ियादा बकरियां पालता था। आह ! कुछ बद नसीब ऐसे भी हैं जो इस शबे बराअत या'नी छुटकारा पाने की रात भी नहीं बख़्शे जाते।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى "फ़ज़ाइलुल अवक़ात" में नक़्ल करते हैं : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : छे (6) आदमियों की इस रात भी बख़्शिश नहीं होगी : (1) शराब का आ़दी (2) मां-बाप का नाफ़रमान (3) बद कारी करने वाला (4) क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ करने वाला (5) तस्वीर बनाने वाला और (6) चुग़ुल ख़ोर। (فضائل الاوقات ج ا ص ۱۳۰ حدیث ۲۷ مکتبۃ المنارۃ، مکۃ المکرمۃ) बा'ज़ दीगर रिवायतों में मुशरिक, अ़दावत वाले, क़ातिल, काहिन, जादूगर, तकब्बुर के साथ पाजामा या तहबन्द टख़्नों के नीचे लटकाने वाले, मुसलमान से बुग़्ज़ो कीना रखने वाले के लिये भी येह वई़द है कि वोह आज की रात मग़फ़िरत की सआ़दत से मह़रूम रहता है, लिहाज़ा हम सब को चाहिये कि बयान कर्दा गुनाहों में से अगर مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ किसी गुनाह में मुलव्वस हों तो वोह बिल ख़ुसूस उस गुनाह से और बिल उ़मूम हर गुनाह से अभी सच्ची तौबा कर लें।

(आक़ा का महीना, स. 11 बित्तग़य्युर)

तौबा पर इस्तिक़ामत के लिये दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल अपना लीजिये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ए'तिकाफ़ की तरग़ीब

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ माहे रमज़ानुल मुबारक की आमद आमद है और इस माहे मुबारक की बरकतों के तो क्या कहने कि इस माह में इ़बादत करने और नेकियों में इज़ाफ़ा करने के मवाक़ेअ़ बहुत बढ़ जाते हैं। चुनान्चे, इस माह में नेकियां बढ़ाने और ख़ुद को गुनाहों से बचाने और ख़ूब ख़ूब इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ पूरे माहे रमज़ान या आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ भी है और ए'तिकाफ़ की फ़ज़ीलत का अन्दाज़ा इस ह़दीसे पाक से

www.dawateislami.net

लगाइये कि उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि सरकारे अबद क़रार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : مَنِ اعْتَكَفَ اِيْمَانًا وَّاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهٗ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ या'नी जिस शख़्स ने ईमान के साथ सवाब ह़ासिल करने की निय्यत से ए'तिकाफ़ किया, उस के पिछले तमाम गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।" (جامع صغیر ص ۱۵۱۶ الحدیث ۸۴۸۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सके तो हर साल वरना ज़िन्दगी में कम अज़ कम एक बार तो पूरे माहे रमज़ानुल मुबारक का ए'तिकाफ़ कर ही लेना चाहिये। हमारे प्यारे प्यारे और रह़मत वाले आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये हर वक़्त कमर बस्ता रहते थे और ख़ुसूसन रमज़ान शरीफ़ में इबादत का ख़ूब ही एहतिमाम फ़रमाया करते। चूंकि माहे रमज़ान ही में शबे क़द्र को भी पोशीदा रखा गया है, लिहाज़ा इस मुबारक रात को तलाश करने के लिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बार पूरे माहे मुबारक का ए'तिकाफ़ फ़रमाया। और यूं भी मस्जिद में पड़ा रहना बहुत बड़ी सआ़दत है और मो'तकिफ़ की तो क्या बात है कि रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने के लिये अपने आप को तमाम मशाग़िल से फ़ारिग़ कर के मस्जिद में डेरे डाल देता है। फ़तावा आ़लमगीरी में है "ए'तिकाफ़ की ख़ूबियां बिल्कुल ही ज़ाहिर हैं क्यूंकि इस में बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये कुल्लियतन (या'नी मुकम्मल त़ौर पर) अपने आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मुन्हमिक कर देता है और उन तमाम मशाग़िले दुन्या से किनारा कश हो जाता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब की राह में ह़ाइल होते हैं और मो'तकिफ़ के तमाम अवक़ात ह़क़ीक़तन या ह़ुक्मन नमाज़ में गुज़रते हैं। (क्यूंकि नमाज़ का इन्तिज़ार करना भी नमाज़ की त़रह़ सवाब रखता है) और ए'तिकाफ़ का मक़्सूदे अस्ली जमाअ़त के साथ नमाज़ का इन्तिज़ार करना है और मो'तकिफ़ उन (फ़िरिश्तों से मुशाबहत रखता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़ुक्म की नाफ़रमानी नहीं करते और जो कुछ उन्हें ह़ुक्म मिलता है उसे बजा लाते हैं, और उन के साथ मुशाबहत रखता है जो शबो रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ (पाकी) बयान करते रहते हैं और इस से उक्ताते नहीं। (فتاوی عالمگیری ج ۱ ص ۲۱۲)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने दौराने ए'तिकाफ़ किस क़दर नेकियां करने के मवाक़ेअ् मिलते हैं । हमें भी हर साल न सही कम अज़् कम ज़िन्दगी में एक बार इस अदाए मुस्तफ़ा को अदा करते हुवे पूरे माहे रमज़ानुल मुबारक का ए'तिकाफ़ कर ही लेना चाहिये और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलानी चाहिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के तह्त दुन्या भर में पूरे माहे रमज़ान और आख़िरी अ़शरे के सुन्नत ए'तिकाफ़ की तरकीब होगी, पाकिस्तान में इस साल पूरे माह के ए'तिकाफ़ के लिये 126 मक़ामात और आख़िरी अ़शरे के ए'तिकाफ़ के लिये 4000 मक़ामात का हदफ़ है, सब से बड़ा ए'तिकाफ़ आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना (कराची) में होगा, जिस में اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी मो'तकिफ़ होंगे, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ए'तिकाफ़ में वुज़ू व ग़ुस्ल, नमाज़ व रोज़ा और दीगर शरई मसाइल के साथ साथ मदनी मुज़ाकरों के ज़रीए़ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से किये गए सुवालात के दिलचस्प जवाबात से मा'लूमात का ढेरो ख़ज़ाना हाथ आता है ।

रह़मते ह़क़ से दामन तुम आ कर भरो
मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
सुन्नतें सीखने के लिये आओ तुम
मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदनी अ़त़िय्यात की तरग़ीब

दा'वते इस्लामी तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक है, जिस का मदनी पैग़ाम अब तक कमो बेश 192 मुमालिक में पहुंच चुका है, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी ख़िदमते दीन के 97 शो'बाजात में मदनी काम कर रही है, सिर्फ़ जामिआ़तुल मदीना (लिलबनीन व लिलबनात), मद्रसतुल मदीना (लिलबनीन व लिलबनात), मद्रसतुल मदीना ऑन लाइन

www.dawateislami.net

(लिलबनीन व लिलबनात) और मदनी चैनल के सालाना अख़राजात करोड़ों नहीं, अरबों रूपे में हैं, दा'वते इस्लामी के मदनी कामों के लिये ज़कात, सदक़ात, अ़ति़य्यात देने के साथ साथ अपने रिश्तेदारों, पड़ोसियों, दोस्तों पर इनफ़िरादी कोशिश कर के उन्हें भी राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल बता कर मदनी अ़ति़य्यात जम्अ़ कीजिये । फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सदक़ा बुराई के 70 दरवाज़े बन्द करता है, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सदक़ा बुरी मौत को रोकता है ।

आइये ! एक मदनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं ।

मेरी बद मआ़शी की आ़दत कैसे ख़त्म हुई ?

बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है, उठती जवानी और अच्छी सिह़्ह़त ने मुझे मग़रूर बना दिया था, नित नए फ़ेन्सी मल्बूसात सिलवाना, कॉलेज आते जाते बस का टिकट भुलाना, कन्डेकटर मांगे तो बद मआ़शी पर उतर आना, रात गए तक आवारा गर्दी में वक़्त गंवाना, जूए में पैसे लुटाना वग़ैरा हर त़रह़ की मा'सिय्यत मुझ में सरायत किये हुवे थी । वालिदैन समझा समझा कर थक चुके थे, मुझ बदकार की इस्लाह़ के लिये दुआ़ करते करते अम्मी जान की पलकें भीग जातीं । हमारे अ़लाक़े के एक इस्लामी भाई कभी कभी सर-सरी त़ौर पर दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की दा'वत पेश कर देते, मैं भी सुनी अन सुनी कर देता । एक बार इजतिमाअ़ वाली शाम वोही इस्लामी भाई महब्बत भरे अन्दाज़ में एक दम इस्रार पर उतर आए कि आज तो तुम को चलना ही पड़ेगा, मैं टालता रहा मगर वोह न माने और देखते ही देखते उन्हों ने रिक्शा रोक लिया और बड़ी मिन्नत के साथ कुछ इस अन्दाज़ में बैठने के लिये दरख़्वास्त की, कि अब मुझ से इन्कार न हो सका, मैं बैठ गया और हम दा'वते इस्लामी के अव्वलीन मदनी मर्कज़ जामेअ़ मस्जिद गुल्ज़ारे ह़बीब आ पहुंचे । जब दुआ़ के लिये बत्तियां बुझाई गईं तो येह समझ कर कि इजतिमाअ़

www.dawateislami.net

ख़त्म हो गया, मैं उठ गया, मुझे क्या मा'लूम कि अब आने वाले लम्हात में मेरी तक़्दीर में मदनी इन्क़िलाब बरपा होने वाला है । ख़ैर मेरे उस मोह़सिन इस्लामी भाई ने मह़ब्बत भरे अन्दाज़ में समझा बुझा कर मुझे जाने से रोका, मैं दोबारा बैठ गया । अन्धेरे में ब आवाज़े बुलन्द ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ की धूम ने मेरा दिल हिला दिया ! ख़ुदा की क़सम ! मैं ने ज़िन्दगी में कभी ऐसी रूह़ानिय्यत देखी थी न सुनी थी । फिर जब रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ शुरूअ़ हुई तो शुरकाए इजतिमाअ़ की हिचकियों की आवाज़ बुलन्द होने लगी, ह़त्ता कि मेरे जैसा पथ्थर दिल आदमी भी फूट फूट कर रोने लगा, मैं ने अपने गुनाहों से तौबा की और दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल का हो कर रह गया । (फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 443)

तुम्हें लुत्फ़ आ जाएगा ज़िन्दगी का क़रीब आ के देखो ज़रा मदनी माह़ोल
तनज़्ज़ुल के गहरे गढ़े में थे उन की तरक़्क़ी का बाइ़स बना मदनी माह़ोल
यक़ीनन मुक़द्दर का वोह है सिकन्दर जिसे ख़ैर से मिल गया मदनी माह़ोल

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! 15 शा'बान के रोज़े की एक ख़ास फ़ज़ीलत है, आइये सुनिये और रोज़ा रखने का ज़ेह्न बनाइये । चुनान्चे,

15 शा'बान का रोज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : जब 15 शा'बान की रात आए तो इस में क़ियाम (या'नी इबादत) करो और दिन में रोज़ा रखो । बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ग़ुरूबे आफ़्ताब से आस्माने दुन्या पर ख़ास तजल्ली फ़रमाता और कहता है : "है कोई मुझ से मग़्फ़िरत त़लब करने वाला कि उसे बख़्श दूं ! है कोई रोज़ी त़लब करने वाला कि उसे रोज़ी दूं ! है कोई मुसीबत ज़दा कि उसे आ़फ़िय्यत अ़त़ा करूं ! है कोई ऐसा ! है कोई ऐसा ! और येह उस वक़्त तक फ़रमाता है कि फ़ज्र तुलूअ़ हो जाए ।"

(سُنَنِ ابن ماجہ ج۲، ص۱۶۰ حدیث ۱۳۸۸)

www.dawateislami.net